

ASHA ARCHIVES
3366

૧૦૯ બેતાલે જુલેચર પૂજા વિધિ માદાભ્ય



૭૩૨
૨૧

वेता

॥१॥

प्रीतिगणाय नमः ॥ ॥ वन्दे देवि मणार्कवर्णमकलमनवदं मुन्दरं भुतना
थं ॥ विरचिगवतारं ह्यनलमववरं लेलिजिष्ठाकरालं ॥ नेत्रं कोशमभव
राकारकलितकपालं मुदमालाकपालं ॥ रुद्रनागाङ्गभरणं भुवनजयरिपुं तस्य
ह्यत्रमालागणेशं ॥ ॥ कैलासशिखरमिन्देवदेवमहेश्वरं ॥ मण्डमालाभारधरं ॥ १॥
हाडमालाविभुषणं ॥ पप्रधप्राञ्जलिभूत्वा माहाकालिभेदेस्वरं ॥ ॥ श्रीकाल्य
वावा ॥ देवयोगे धर्मज्ञप्रानिनी प्राणरक्षकः ॥ सत्रुविनाशनं मन्त्रं यत्नालस्य कुले
स्वरं ॥ कथं ते भयमितानी गुरुमाधिनिवासी ॥ गङ्गाक्षरे भगवन्नामा एषो ब्रूते न तथा

॥ एतत्तत्पारव्याजकं मधं मां प्रतेव क्रमहिमि ॥ १॥ श्रीमहाभैरवो वाच ॥ तदहं प्रवक्षा
मिविजमार्गविशेषतः ॥ हकारश्चकारश्च ईकारश्च सप्तवितः ॥ २॥ नकारविदु
भादेव केतालेति स्म दित्तनः ॥ स्वाहा दोषमुनामेति जेजत्पवमहेश्वरं ॥ ३॥ नारायणो
भसं ज्यैव वस्यार्थमो ॥ हने पिवा ॥ जपेत्तु माहाकालिभिदिदासाधकं पुनः ॥ ४॥
अङ्गनामं करं वैव ह्या देवताप्रयत्नतः ॥ मन्त्रधारमिमं कालि सर्वदेवप्रीयं क
रु ॥ ५॥ ईमं मन्त्रमुच्चाप्य साधनियं गतिरिषिभिः ॥ ययं कार्ययते कामं तं तं भव
ति निश्चयं ॥ ६॥ विशेषतः कालिजुगप्राप्तुमिदं विव्याते ॥ हृदये तु मयी

७
रे सशिरेयातु महासन ॥११॥ अग्निरुपशिखापातु विद्युत्पातुकवच
वेता ॥ नेत्रेयातु धोलापाणि सर्वाङ्गेभैरवा सने ॥१२॥ सर्वान्यासं विधि
॥२॥ त्वापञ्चात्म अप्रयोजयत् ॥ ॥३॥ क्लृप्तेतालायेममरिपुनासयस्त्वा मम
हा ॥१३॥ ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि साधका नां सुरावहं ॥ यो मोदीरविना ॥२॥
यको रथमुखं सर्वं सुकार्यं प्रदं ॥१४॥ ये देवा सुराकि नरेः पुलगमं स
र्वं पिशाचं ॥ यो वै पाहि मया भैरव गणपतीति दिदादप्रभुं ॥१५॥ यो वि
प्राक्षयते तोहि सकर्तुं मुखाडमालाचरंतं ॥ यो सोमसूर्यप्रकासतुल्यवद

नं नागं तिकेतिर्जितं ॥१६॥ वेतालस्थूलजिह्वाकं चरुणां विन्दुलपक्षे
कं गजं ॥ शोणधपोरुखमुदरवालीध्वजकलेवरवामकरस्य ॥१७॥ नाग
कुण्डलमुखाडकपालिक्लृप्तकलेवरमुके सविद्युतं ॥ पात्रधरेकरभैर
वकाशभूतपिशाचगणनायकरूपं ॥१८॥ अथ माहावरवाग्रमहेन्द्र
दण्डकंकालयदवावररूपं ॥ ॥ श्रीकालभैरव उवाच ॥ शृणु देवि प्रक
क्षमतिवेतालस्य महसूक्तं ॥ यः पथति तं रात्रां सर्वे साक्षाद्भवेत् ॥ ॥
अस्य श्रीमहासिद्धिवेतालसहस्रनामस्तोत्रं मम अस्य महाकालभैरवोऽहं

अथिहनुपुपुनदुर्लभं वीरं वेतालदेवता दत्तिशक्तिस्वस्तिकिलकेशद्वय
 नाशार्थेजपेद्विगीयोग ॥ ॥ वादवोवदवागिश्चतुष्टोभात्तकरत्तथा ॥
 वेतो वादिमुषिवदिदेववादिमुर्तिमदेस्वर ॥ २२ ॥ वादिमातिनभक्तिशोषादिने सध
 ॥ ३ ॥ त्रयवानज ॥ वादिमुत्रवलमर्तिविदिमुपकुलोवरा ॥ २३ ॥ वारनित्रसोजीकार ॥ ३४ ॥
 मदावातवारुणिपथित ॥ वालरूपोवालके शोवालकपालकावनुज
 ॥ २४ ॥ वालभेदाधाधिसोवालवानररूपित ॥ वालभदोवालवरोज
 वालभेदेमदेस्वर ॥ २५ ॥ वामभोवामोच्चारवाक्यदुर्लभस्वरवादिह

॥ २६ ॥
 सवदिस्वासवदिकपालभुषणवदिनेजोवदिवाले ॥ वीदिप्रणतभु
 षण ॥ वदुरूपोवदुरूपालिचतुकोवलवारिण ॥ २७ ॥ वदोरवालाभिज्ञो
 वासहासम्बन्धे ॥ वालार्मिककपालिसोवालकः सिरभुषण ॥ २८ ॥
 वासुदेवोदयामिदुवकामकोणोस्वर ॥ विरभदोमहासेनविरभुति
 वसिक ॥ २९ ॥ विरसिहोमहामारिविरसिखिभुषण ॥ विष्णुमुक्ति
 विष्णुवाचावेसववेसवापिया ॥ ३० ॥ विरुपाक्षेपियकरवादिमासेम

श्वप्रिया॥ बालासक्त्या बालरूपे वासुकि वदतु पु॥ ३१॥ वसुधा ह वासु
 वेता पाति वसुधान् वसुधा धिय॥ वीर्ये स्वाः प्रियकारः विज्वपात् सत्त्वदा
 ॥४॥ यक॥ ३२॥ अग्निरूपेन गिपे व अग्नीमाला विभुषणा॥ अग्निमुक्ति
 निवर्तये व अमास्तुत रूपेन अन्नं त वासुधर्मनो गेः अव्यक्तमुदु नु निरा
 ॥ ३३॥ अग्निवारा अग्नेने से अग्निपु ज विभुषणा अग्नीनाग अग्निकार अ
 श्रीलंकार भुषणा॥ अग्निनाग अग्नीकार अग्नि लंकार भुषणा॥ असि
 वानात धि सो अर्थद अर्थदायक॥ ३४॥ ईश्वर समद्वयि इ इश्वी कन

मधु
 ॥४॥

कासना॥ ईश्वर सर्वभूतैः सो ईश्वर विंसा बाधीया॥ ३६॥ ईश्वर इन्द्रे
 शि स ईश्वर महामाणा॥ ईश्वर वासना धि शो इन्द्राय वरदायक॥ ३७॥ उवर्णा
 वद नो देवो उ नो देवि वल युदः॥ अनाद्यो य कि लेशो अ न्ये देवान् ऐरता॥ ३८॥
 एका गगमना धि सो एक रात गुन नायक॥ ऐरावत गजे द भरे का अयि
 यिठ वासिनि॥ ३९॥ ओका यति मोदि निन ओष धि सो माहावत॥ असे स्वा
 यानन्दः अकाश प्रियकारः॥ ४०॥ अत व अत माला वृत्त न का लो न मो
 यमः॥ अग्निमाला मधे सिस अग्नी रूप तग्नी युद॥ ४१॥ अग्नि गती प्रना

थकं भग्नि जिह्वा प्रलम्बित ॥ भग्नि ज्वाला लज्जिका भग्नि कर्तक भुवरा ॥
 श्रीवे ४२ ॥ कंकाल हा भुङ्क्ते कर्षण परिमालिक ॥ कर्षण गामध्यस्था कर्षण
 ता गणनायक ॥ ४३ ॥ कुमाकुल गान्धारी कुमाथु च मासना ॥ कर्षण ग
 ॥ ४४ ॥ वसु गत वैवर्को मोदि वृद्धास्तथा ॥ ४५ ॥ स्तेयो कोमल शान्त कर्षण कुठनाय
 कैवेच गनमालि च विचर गणामेविक ॥ ४६ ॥ विवला मत्रयेदि स्थि
 विचर गननायक विचर द्वा गणधिमो स्विदा स्वेद प्रसृतत ॥ ४७ ॥
 पवसु मिसमया दिवम निखग भुवन ॥ स्वका मेख वशी भवदा कषदहा

रश्मिका ॥ ४८ ॥ हिम मेस गुणाकार ॥ ४९ ॥ गुम भक्षणा भवस वैयौ गेश जका
 रुततायक ॥ ५० ॥ टंके स्वरं ककार टिमिठ धरे चरा ॥ टटिठो कत रेशि शः टदि व
 ल्ललताजिक ॥ ५१ ॥ ठका ठरदा ता वठ कार ठला रुमि शि ॥ ठका रुम क मथा ठका
 रमन वामिनि ॥ ५२ ॥ ठस्वस्तिः वक्त कारत का गणनायक ॥ ठठे चरे ठका रमा ठगु र्म
 धिक ॥ ५३ ॥ ठाठिठे ठेठु ता वठ गण ॥ ठग गगना ॥ ठम ठम ए धिमो ठम ए मनु नासक
 ॥ ५४ ॥ ठम रु ठम गारु ठम रु रु धितः ॥ ठाकि शि गण मध्यस्था ठाकि नि गण पुज ॥ ५५
 ठाडि ठु वैठे ठाव दका ठा म न प्रिय ॥ ठुठिठ गणाना नदि र वरि ठा ठ पाठ के ॥ ५६ ॥ ठा

श्री
वेना

॥ ८ ॥

स्वनिनितांको निनिर्लेपनिश्चमात्मक ॥ नितवर्गनितकहोनिताकोनेनिंजन ॥
८० ॥ निमलेनवा द्विद्विसोनिमेषप्राणितापहृहृह ॥ निमावागुणाशब्दनित्रोस्वाण
प्रीया ॥ निश्चरनिपुमानो निजोशमममौहृह ॥ नीरूपमोलिलवपुनिजमुदरमुद्रज ॥ ८२ ॥
नितानां वरोनिरेह ॥ निश्चः समठिममुद्रज ॥ निमाकासममुधनिसाकारगुणाकार ॥ ८३ ॥
नित्यः सिद्धिगणोसन्निधिनिधिनिधिदायक ॥ निरालम्बनित्रपचोनिर्गोहो गद
यक ॥ ८४ ॥ पताकाधजमानुटफलात्ताधरायक ॥ पताकावर्योदकप्रतापगणधि
य ॥ ८५ ॥ पञ्चालयास्थाप्रानप्रेतगणमहेन्द्र ॥ प्रेतमुक्तिप्रतरूपः प्रेतगणनि

८६

॥ ८ ॥

नायक ॥ ८६ ॥ प्रतरूपोमहेन्द्रानो प्रतात्ताप्रेतनायक ॥ प्रितिप्रेतमलप्रितमंहाप्रेतग
णो ॥ ८७ ॥ प्रतपालिप्रतपतिजीताम्बरमुमाशम ॥ पञ्चामुद्रोवैरोपनिष्ठिमो
मुज ॥ ८८ ॥ पञ्चनदप्रेतमुक्तिप्रेतगणप्रभुका ॥ पुराधिपः प्रेतगतिः प्रतवाहकताधि
य ॥ ८९ ॥ पुरुषोपरमानन्दपुरुषपरमोगुह ॥ पुराणपुरुषोक्षीयपञ्चामुद्रविनासिनि ॥
९० ॥ पीठनागेपीतयुक्तोपिठोयिठवाहक ॥ पिठालिनोपिठविरोपिठसिद्धिनि
यक ॥ ९१ ॥ पिठराजगुणकेरोपिनाकप्रमथाधिपनानिपाजपात्रकारपात्रपाई
वरेस्वर ॥ ९२ ॥ परुपावकारधिपपीठसहीपिनायकपंचात्मापंचवदनोपंचतीर्थ

निवासका॥२३॥पंचवक्त्रमर्चमानपंचवक्त्रमुगधिप॥प्राणोऽवरोप्राणपतिः प्राणज
 गइस्वारी॥२४॥फरिधरफरिधरफरिधरकनसोभति॥फरिधरचनमहाविष्णु
 किं कुं प्रो किं कुं स्वाहा॥२५॥फरिपादफरिजवफरिवाहुफरिगारफरिजुशुड
 माहातेजफरिमिधरस्तथा॥२६॥हरिरूपफरिप्राणफरिभुवनमुदर॥वाह
 निप्राणकारिववाहनधनामकारका॥२७॥वाहनपरमपिवाहसुप्रमोदगाहक
 ॥नवासनमवापावमक्षककुर्मंजनं॥२८॥भुवाभुजकाकरकारभुक्तितिलाग
 न॥भुतेसभुतगणवभुतानोवजराधिप॥२९॥भावमुत्तीस्त्रिभावगेःभद्रकात्या

सनस्योते॥भद्रासनगणविमभाभुमाभानुलोचनसंघ००॥भद्रमुपभद्रका
 लिभद्रुगभाहावल॥माहावलोमाहाविर्धेमाहाप्रजापदक॥१०१॥म
 हापरापमहाहृदिमाहाभुतेगणेश॥माहाभैरवभुतेसनहासिनमोहध्वज
 ॥१०२॥महातेजकुलधतिमाहामातामुभाकुल॥मातासि वमाहातेजप्रस
 मोसमहाप्रिया॥१०३॥माहापद्मादवदनमहासमाननायक॥महात्मासमाहा
 कोलामाहावमफरुवप्रदा॥१०४॥महासेवेनापति श्रीनानुभैरवगणपद॥म
 हाभैरवनागावमाहाविभवदायक॥१०५॥यमिसचयमाधिसयमशंकु

